ॐ

# समर्पण

प्रिय पाठक गण !

श्रीमान स्वामी महादेवा आश्रम जी ने जो धर्म की सेवा की है, वर्णनातीत तथा लेखन शक्ति से परे है। आप संस्कृत भाषा के धुरन्धर पंडित तथा महान् आत्मा व्यक्ति थे। जीवन काल में अपने सुमधुर उपदेश और उच्चकोटि के सत्संग से जनता को कृतार्थ करते रहे। कनखल, ऋषिकेश इत्यादि स्थानों में दण्डी-आश्रम स्थापन किये, प्रेमी भक्तजनों से और भी कई स्थानों पर मकान बनवाये देहरादून से दक्षिण पांच मील के फ़ासले पर एक शंकराचार्य-मठ बनवाया, जिसमें मन्दिर, धर्मशाला और वाटिका स्थापित की है जो त्यागी, विरक्तों तथा भजनानन्दी महात्माओं के लिये भगवत भजनार्थ एक पवित्र, शान्तिमय स्थान है और भी एक शांत कुंड पुख्ता बन वाया।

कहाँ तक कही जायें स्वामी जी के पुरुषार्थ की कथा जिन महा पुरुषों को उनके दर्शन सत्सग तथा उपदेश-श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वही कुछ समझ सकते हैं उनके उपदेशामृत में वह सरलता भरी थी कि जिसने एक बार सुना आत्मदर्शनाभिलाषी हो जाता था स्वामी जी पूर्ण रूप से ब्रह्म-वक्ता तथा ब्रह्म निष्ठ थे धन्य हैं ऐसे सत्पुरुषों को।

मेरी आत्मा में जो आनन्द और स्वतंत्रता आज विराजित है सब इन्हीं महानुभावी ब्रह्म वक्ता महात्मा के चरणों का प्रताप है इसी हेतु यह एक क्षुद्र पुष्पाँजली पद-कमलों में सादर समर्पित करता हूँ आशा है कि श्रीमान जी सहर्ष ग्रहण करके दास को कृत-कृत्य करेंगे।

दासानुदासः— स्वतन्त्र,

ॐ

परमात्मने नमः

# ॥ प्रस्तावना ॥

सज्जन वृन्द !

वर्तमान् काल में श्री १११ श्री स्वामी सरस्वती नंद जी जो धर्म-सेवा प्राण-पन से कर रहे हैं जन साधारण तथा हिन्दु समाज से अविदित नहीं हैं। आप के वेदान्त और फ़लसफ़ी से परिपूर्ण उपदेश श्रवण करके हिन्दू, मुसलमान, ईसाई मत मतान्तर के मानने वाली जनता मुग्ध प्राय होकर परस्पर प्रेमोत्फुल्लित चित से एक्य भाव धारण कर मिल जाने की चेष्टा करने लगती है आप देश भाषा के अतिरिक्त इंग्रेज़ी भाषा के भी सुपंडित हैं हज़ारों सद्ग्रन्थों से खोज २ कर श्रीमान् स्वामी जी ने मनुष्य मात्र के हितार्थ सुधा रस परिपूरित यह वचनामृत वर्णन किये हैं जिस से भारत भूमी के सत्य धर्म प्रिय युवक गण मनन कर के मल विक्षेप, आवर्ण रहित शुद्ध अंतः करण हो लौकिक तथा पार लौकिक सुख शान्ति प्राप्त करेंगे। यदि आप अपने कुटुम्बी, स्त्री, बच्चों के जीवन को पवित्र करना और सर्व्व सुख की इच्छा रखते हैं यदि आप मनुष्य जीवन को सफल बना कर कृतार्थ होना चाहते हैं, तो लीजिये ! वचनामृत की एक प्रति अपनी पाकेट में रखिये अवसर प्राप्त होने पर ध्यान पूर्वक पठन कर के मनन कीजिये फिर नित्य साधन कर के साक्षात् कार होने की चेष्टा कीजिये इस शुद्ध पुस्तक में एक २ वचन करोड़ों रुपये

का है मैं सत्य कहता हूँ यदि आप प्रत्येक वचन को मनन शील हो कर अमल में लायेंगे तो आप का जीवन पथ अमृत रूप हो कर सुख शान्ति से परिपूर्ण हो जायगा यह आप के लिये गागर में सुधा सागर भर कर स्वामी जी ने महान् उपकार किया है। यदि आप लोगों ने इस को अपना कर श्रीमान् जी के उद्योग तथा पुरुषार्थ की सहानुभूति प्रकट कर के कृतार्थ किया तो स्वामी जी महाराज वेदान्त विषय पर कोई और पुस्तक लिख कर हिन्दु समाज का उद्धार करने की चेष्टा करेंगे।

आशा है कि त्रिविध ताप से तापित दुखित मनुष्य मात्र यह वचनामृत पान करके सान्त्वना पायेंगे इस में भक्ति. ज्ञान वैराग्य. सत्संग, दुर्जनता का वर्णन. धर्म-गौरव इत्यादि अनेकानेक सिद्धान्तों पर दृष्टि डाली है और सरल भाषामें मनुष्य मात्र के लाभार्थ प्रकाशित किया है।
प्यारी हिन्दु जनता !

स्वामी जी के उद्योग को सफल करके और स्वयं भी अपना जीवन सफल बना कर कृत कृत्य हो जाईये।

प्यारे ! भारत वीरो !! आओ—
वचन-सुधा-रस-पान करो !
सुधा-रूप हो सुधा सरित में—
दुखः दरिद्र-अवसान करो !

आप का शुभ चिन्तकः— सुधादास साधु।

ओ३म्

प्रब्रह्मणे नमः

श्री

# श्री वचनामृत

[१] जिसको उच्चता प्राप्त करनी हो तो विनयी बनना चाहिये ।

[२] यदि पुरुषार्थ करना हो तो सच्चा बनना चाहिये

[३] यदि गौरव प्राप्त करना चाहो तो ईश्वर से भय करो ।

[४] महत्व प्राप्त करने को इच्छा हो तो धैर्य्य वान् बनो ।

[५] शान्ति प्राप्त करनी हो तो वैराग्य वान बनो ।

[६] यदि सम्पत्ति प्राप्त करनी चाहो तो धनियों का आश्रय ग्रहण करो ।

[७] मनुष्य कितना ही शास्त्र पढ़े, जब तक गुरु की देख रेख और सेवा में रहकर आत्म-शासन नहीं सीखता है तब तक मनुष्यत्व को प्राप्त नहीं हो सकता ।

[८] जो मनुष्य साधु सन्तों की कथा कीर्त्तन तथा सदुपदेश तो सुनता है परन्तु सेवा और सम्मान करना नहीं जानता वह कभी भी साधु सत्संग का फल नहीं ले सकता और साधु संतो की कृपा से भी वंचित रह जाता है ।

[९] जो पुरुष अपने महत्व की तरफ लक्ष्य नहीं

रखना उसी का महत्व श्रेष्ठ है जो लक्ष्य रखना है उसका महत्व नहीं रहता ।

[१०] पृथ्वी पर तीन प्रकार के मनुष्य श्रेष्ठ हैं।

[१] ज्ञान भक्ति की बात करे।

[२] साधक संसार की वस्तुओं में आसक्ति न रखता हो।

[३] जो ऋषि अलौकिक रीति से प्रभु की प्रशंसा करे ।

[११] यदि तुम दूसरों की तरफ से आशा रखोगे तो तुम्हारी ईश्वर की तरफ से आशा निष्फल हो जायगी

[१२] विनय के तीन मूल हैं ।

[क] अपनी अज्ञानता का स्मर्ण करो।

[ख] अपने पापों को याद करो ।

[ग] अपनी त्रुटियां और आवश्यकतायें प्रभु पास निवेदन करो ।

[१३] संसार में मनुष्य के तीन महा शत्रु हैं।

[क] धन का लोभ।

[ख] लोगों के पास और बुड़ाई चाहना ।

[ग] लोक प्रिय होने की आकांक्षा होना ।

[१४] मित्र की इच्छा है तो परमात्मा ही मित्र है।

[१५] संगी चाहिये तो विधाना बस है ।

[१६] प्रतिष्ठा की इच्छा है तो संसार काफी है ।

[१७] काम धन्धे की आवश्यकता है तो तप बस है

[१८] उपदेश चाहते हो तो मृत्यु का स्मर्ण करो यदि यह अच्छा नहीं लगता हो तो तुम्हारे लिये नर्क स्थान है ।

[१९] भोग भोगते समय यह ध्यान रहे कि ईश्वर देख रहा है।

[२०] बोलते हुये ध्यान रखना कि सत का नाश न हो जाये।

[२१] देखते वक्त ध्यान रखो कि साधुता का नाश न होने पावे।

[२२] इन चार बातों से आत्म-परीक्षा करते रहना चाहिये।

[क] शुभ कार्य्य करते समय जो कार्य्य करता हूँ वह निष्कपट भाव से करता हूँ या नहीं।

[ख] जो कुछ मैं बोलता हूँ निस्वार्थ होकर बोलता हूँ या नहीं।

[ग] जो दान इत्यादि करता हूँ वह प्रति फल की इच्छा स करता हूँ या नहीं।

[घ] सम्पत्ति संचय करता हूँ तो कृपणता का त्याग किया है या नहीं।

[२३] मनुष्य काम तो नर्क जाने के करता है और आशा करता है स्वर्ग की।

[२४] मनुष्य रोग के भय से भोजन करना तो बन्द कर देता है परन्तु मृत्यु का भय निश्चय रूप से होने पर भी पाप करने से नहीं अटकता। कितने आश्चर्य्य की बात है।

[२५] साँसारिक मान बड़ाई शैतान की मदिरा है जो मनुष्य इसका पान करके लहर लेता है वह अपने पापों के लिये पश्चाताप तथा आत्म-रूपी तीव्र तपश्चर्य्या नहीं कर सकता न ईश्वर लाभ कर सकता है।

[२६] इस संसार में तीन पुरुषों को बुद्धिमान् जानना चाहिये।

[क] जिसने साँसारिक परित्याग किया हो।

[ख] जिसने मरने से पहिले ही सब कुछ तैयारी करके रखा हो।

[ग] जो पहिलेसे ही ईश्वरको प्रसन्न करके रखता है।

[२७] साधक तीन प्रकार के हैं।

[क] रागी [ख] अनुरागी [ग] कर्म रागी। वैरागी का धन सहन शीलता है। अनुरागी का धन प्रभु प्रति अनन्य प्रेम तथा योगी का सब के प्रति बन्धुभाव है।

[२८] ईश्वर एक है यह ज्ञान ज्योति समान, ईश्वर अनेक हैं यह ज्ञान अग्नि तुल्य है। अनेकता की अग्नि तमाम सद् गुणों को दग्ध कर देती है।

[२९] ईश्वर की उपासना यही ईश्वर का भरपूर भंडार है। प्रभु प्रार्थना यही ईश्वरसे मिलने की चाभीहै।

[३०] जिस मनुष्य में श्रद्धा नहीं है वह धर्म का पालन नहीं कर सकता।

[३१] सत्य को छोड़ असत्य में पड़ना इसी का नाम अधोगती है।

[३२] साधक जब अधिक भोजन कर लेता है तो उसके साधन में रुकावट पड़नेसे देवता रुदन करता है।

[३३] अहार में जिसकी लालसा बढ़ती जाती है वह साधन के मार्ग से दूर हो जाया करता है।

[३४] आत्मा को स्वयं ऐसा बना लेना चाहिये कि तीन दिन तक भी यदि भोजन न मिले तो भी मन ढीला

न पड़े जब तक ऐसी योग्यता न हो तब तक साधु फकीर का भेष धारण करना मूर्खता है।

[३५] प्रभु प्रेमियोंका तीन प्रकारका स्वभाव होताहै।

[क] सब चर अचर में ईश्वर देखता है।

[ख] सांसारिक पदार्थों में से वासना की निवृत्ति।

[ग] ईश्वर में सब वस्तु रही हुई है ऐसी दृढ मान्यता।

[३६] दुनिया के मनुष्यों की सेवा तो नौकर चाकर किया करते हैं और अलौकिक मनुष्यों की सेवा साधु ब्राह्मण तथा महा पुरुष करते हैं।

[३७] संसार के मनुष्यों के साथ थोड़ा बोलना चाहिये। अधिकतर तो ईश्वर के साथ वार्त्तालाप करना चाहिये।

[३८] ईश्वर के साथ जिसकी मित्रता है उसकी दुनिया की सम्पत्ति के साथ शत्रुता हो जाती है।

[३६] यदि कोई ज्ञानी के पास जाकर उसे प्रणाम करे तथा रोगी अवस्था में देख कर उसकी सेवा न करे तो इससे ज्ञानी का विशेष लाभ होता है।

[४०] रात होने से योगी का एकान्त में आनन्द प्राप्त होता है प्रभात होने पर लोगों की खट पट शुरु हो जाती है तो योगी को खेद होता है। कारण, कि मनुष्य आकर के संसार के प्रपंचों की वातें करें यह योगी को पसन्द नहीं होता।

[४१] विषयी मनुष्य तीन बातों का अफसोस करते २ मर जाता है।

[क] इन्द्रियों के सम्भोग से तृप्ति नहीं हुई।

[ख] धारणा की हुई आशा पूरी नहीं हुई ।

[ग] परलोक के लिये कुछ नहीं किया ।

[४२] जो प्रभु से भय करता है उससे दुनिया भी भय करती है।

[४३] स्वर्ग में कोई रोये, तो आश्चर्य्य की बात है इसी प्रकार दुनिया में कोई हंसे तो यह भी आश्चर्य्य जनक है।

[४४] मायावी संसार से सदैव चैतन्य रहना चाहिये क्योंकि यह मोटे २ पंडितों के हृदय में अपना अधिकार जमा कर रखना है ।

[४५] मनुष्य छः आपत्तियों में डूबा हुआ मालूम होता है।

[क] पारलौकिक कर्त्तव्य में बेदरकार रहना।

[ख] वासना का वेग रोके रहना ।

[ग] मृत्यु के समय निरास होना ।

[घ] ईश्वर को सन्तुष्ट करने के अतिरिक्त मनुष्यों को अधिक सन्तुष्ट करना ।

[ङ] धार्मिक तथा सात्विक कर्म करने की अपेक्षा राजसिक और तामसिक कार्य्यों में प्रवृत्त रहना ।

[च] अपने दोषों और धार्मिक पुरुषों के सद्गुणों को छिपा कर कपोल कल्पित दर्शाना ।

(४६) अनासक्ति की तीन अवस्थायें हैं ।

(क) सत्य रूप मोटे महात्मा जिसकी लोगों में बड़ी कीर्ति होवे, बोलता नहीं वह तो ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करता है चाहे कोई उससे नाराज़ रहे अथवा राज़ी । वह तो लेश मात्र भी परवाह नहीं करता ।

(ख) जिस कर्म से ईश्वर नाराज़ हो या पसन्द न करता हो उसे अपनी इन्द्रियों द्वारा करने से अटकता है

(ग) जिस कर्म से ईश्वर राज़ी होवे ऐसा आचरण करने का वह प्रयत्न करता है।

(४७) नीचे कहे हुवे चार आचरणों से मनुष्य का मन रोगी समझना चाहिये।

(क) उपासना से आनन्द होवे नहीं।

(ख) ईश्वर का भय माने नहीं।

(ग) बोध लेने की दृष्टि से कोई वस्तु को देखे नहीं।

(घ) ज्ञान को सुनकर उसके मर्म्म को ग्रहण न करे।

(४८) ईश्वर स्मरण मेरे जीवन की खूराक है प्रभु प्रशंसा जीवन के लिये पानी है। तथा ईश्वर से लज्जा पाना यह जीवन का वस्त्र है ऐसा ध्यान रखे।

(४९) सत्य. यही ईश्वर की तलवार है जिसके ऊपर पड़ती है. ज़ख्म किये वग़ैर नहीं रहती।

(५०) सच्चे प्रभु प्रेमी के दो लक्षण हैं।

(क) स्तुति. निन्दा में सम भाव रहना।

(ख) धर्म अधर्म पालन और अनुष्ठान में पारलौकिक कामना न रखना।

(५१) विश्वास के तीन लक्षण हैं।

(क) तमाम पदार्थों में ईश्वर का देखना।

(ख) सर्व कार्य्य ईश्वर की ओर दृष्टि करके करना।

(ग) किसी पन अथवा अवस्था में ईश्वर की सहायता याचना करनी।

(५२) प्रभु पर विश्वास करने वाले के तीन चिन्ह हैं

(क) जीवित दशा में सांसारिक लोगों से दूर रहना।

(ख) दान देने वाले की प्रशंसा या खुशामद न करना

(ग) दुख देने वाले का भी तिरस्कार न करना ।

(५३) जो मनुष्य ईश्वर से भय मान कर चलता है वही परम धाम का अधिकारी होकर मुक्ति पा सकता है

(५४. ईश्वर अपने दास को ज्ञान में दो प्रकार से देखता है ।

(क) साधनों की कुशलता में ।

(ख) ईश्वर स्वरुप का अपरोक्ष ज्ञान दूसरा ज्ञान नहीं

(५५) जीविका प्राप्ति के लिये जो चिन्ता और प्रपंच नहीं करता वही सच्चा विश्वासी है ।

(५६) प्रभु जिस पर कृपा करता है उसको तीन प्रकार का स्वभाव देता है ।

(क) नदी जैसी दीन शीलता ।

(ख) सूर्य्य जैसी उदारता ।

(ग) पृथ्वी जैसी सहन शीलता ।

(५७) शिष्य गुरू की ओर जितनी श्रद्धा रखता है उतनी ही गुरु की कृपा-दृष्टि अधिक उदार हो जाती है ।

(५८) जिसने अपना मन, वाणि और शरीर ईश्वर को सौंप दिया है वही दानियों में वीर शिरोमणि है ।

(५९) ईश्वर दर्शन करने के लिये व्याकुलता ...... ... एकान्त और प्रभु महिमा का स्मर्ण कीर्त्तन ही श्रेष्ट साधन है ।

(६०) इन चार आदमियों के पास खाली हाथ न जाना चाहिये ।

(क) कुटुम्ब के पास।

(ख) रोगियों के पास ।

(ग) प्रभु प्रेमी के निकट ।

(घ) राजा के समीप ।

(६१) उन्नति कौन ? जिसको पाप दबा नहीं सकता

(६२) मुक्त कौन ? दुनियावी लोभ जिसको दास नहीं बना सकता।

(६३) मर्द कौन ? जिसको शैतान कैद न कर सके।

(६४) ज्ञानी कौन ? जिसके सब भाव ईश्वर प्राप्ति के लिये एकनिष्ठ हो जावें।

(६५) लोगों की नज़र में जिसका दर्जा बड़ा होगया है और वह भी अपने तईं बड़ा समझता है उसे समझो कि यह हल्का मनुष्य है।

(६६) जो मनुष्य आपत्ति में भी अपने ऊपर ईश्वर की कृपा देखता है वह मृत्यु के आधीन होता ही नहीं।

(६७) ईश्वर के प्रेमी शरीर को रखने की अपेक्षा छोड़ने में ही आनन्द मनाते हैं।

(६८) ईश्वर प्रेमी को निम्न लिखित चार बातों का सदैव पालन करना चाहिये।

(क) जितनी भूख हो उससे थोड़ा खाना।

(ख) लौकिक प्रतिष्ठा का परित्याग।

(ग) निर्धनता को स्वीकृति।

(घ) ईश्वर इच्छा में सन्तुष्टता।

(६९) जो मनुष्य भूख से कम खाता है उसके समीप शैतान आ ही नहीं सकता और जो भूख से अधिक तथा पेट भर के खाता है वही आपत्तियों का मूल है।

(७०) इन छः बातों का आश्रय लेना उचित है।

(क) ईश्वरीय प्रार्थना के ग्रन्थ।

(ख) खान पान की पवित्रता।

(ग) निन्दा करने वाले से दूर रहना।

(घ) निषेध बातों से बचना।

(ङ) जो कुछ देने का विचार हो फौरन दे देना।

(च) ऋषि मुनियों प्रचार की हुई आज्ञाओं अनुसरण करना।

(७१) धर्म के तीन मूल हैं।

(क) विचार और आचरण में महात्माओं के मार्ग पर चलो।

(ख) खान पान पवित्र रखो।

[ग] सत्कार्यों में स्थिति और प्रीति रखनी।

[७२] प्रभु पर निर्भर रहने वालों के तीन लक्षण हैं।

[क] किसी के पास याचना न करनी।

[ख] मिले तौभी लेना नहीं।

[ग] यदि लेवे तो फौरन बाँट देवे।

[७३] ईश्वर के मानने वाले के तीन लक्षण हैं।

[क] ईश्वर के प्रति पूर्ण श्रद्धा।

[ख] अध्यात्म विद्या का प्रकाश होना।

[ग] परमात्मा का साक्षात् कार।

[७४] जीवन में यह पाँच बातें अमूल्य रत्न हैं!

[क] ऐसी फकीरी कि जो अपार आन्तरिक सम्पत्ति दर्शावे।

[ख] ऐसा लंघन जिससे शान्ति मय तृप्ति प्रकट होवे

[ग] ऐसा दुख जिसमें प्रसन्नता का दर्शन हो।

[घ] ऐसी वीरता जो शत्रु के प्रति भी मित्र भाव दिखलाई दे।

[ङ] उपवास और प्रभु स्मरण करके ऐसी साधना साधे कि जो समर्थ का दर्शन करावे।

[७५] ईश्वर के निकट शीघ्र प्राप्त होने का यही श्रेष्ठ

मार्ग है कि किसी दुनियादार से अपने स्वार्थ के लिये कोई वस्तु लेने की इच्छा न हो और यदि अपने पास की वस्तु कोई माँगे तो उसे परमार्थ समझ कर फौरन दे डाले।

[७६] प्रभु प्रेम की शिक्षा यह पंडितों के बोध से प्रकट नहीं होती इस आनन्द को तो प्रभु प्रति तन्मय होकर निष्काम कर्म करने वालों से प्राप्त करनी चाहिये।

[७७] वृद्ध होने से पहिले ही युवावस्था में जीवन को मुख्य साधन बना लेना चाहिये। जब वृद्ध हो जायेंगे और इन्द्रियां शिथिल हो जायेंगी तो कुछ भी न कर सकोगे

[७८] निम्न लिखित परिमाण से ज्यादा मिले वह निष्प्रयोजन तथा बोझ रूप है।

[क] प्राण रह सके इतना अन्न।

[ख] प्यास दूर हो जाय इतना जल।

[ग] लज्जा निवारण हो जाय इतना वस्त्र।

[घ] रहने जितना घर।

[ङ] उपयोगी होवे इतना ज्ञान।

[७९] जिस शक्ति द्वारा मन व इन्द्रियों को वश में कर सकें वही शक्ति श्रेष्ठ है।

[८०] मन तीन प्रकार का है।

[क] पर्वत जैसा।

[ख] झाड़ जैसा।

[ग] तिनके जैसा।

[८१] जिसके अन्तः करण में संसार की कामनायें भरी पड़ी हैं उसमें यह पांच बातें नहीं रह सकती।

[क] ईश्वर का भय।

[ख] ईश्वर ऊपर प्रेम।

[ग] ईश्वर से लज्जा।

[घ] ईश्वर से मित्रता।

[८२] आपका परित्याग तीन कारणों से हो सकता है।

[क] नर्क का भय।

[ख] स्वर्ग की कामना।

[ग] ईश्वर की लज्जा।

[८३] पूरा पेट भर कर खाने से निम्नि लिखित दशा हो जाती है।

[क] ईश्वर साधन की मधुरता अनुभव नहीं कर सकता।

[ख] स्मरण शक्ति कम हो जाती है।

[ग] लोगों के ऊपर दया भाव नहीं रख सकता क्योंकि वह अपनी भांति दूसरों को भी तृप्त ही समझता है

[घ] साधन करना कठिन हो जाता है।

[ङ] इन्द्रियों के भोगों की प्रबल इच्छा होती है।

[च] तमाम श्रद्धालु भक्त प्रभु के मन्दिर और यह पाखाने में आवाज़ करता है।

[८४] प्रभु को प्राप्त करने की अति प्रिय सामग्री अल्प अहार है।

[८५] परलोक की कुँजी भी स्वल्प अहार है।

[८६] संसार के द्वार की कुंजी क्या ? पर्ण-भोजन

[८७] यह चार बातें ईश्वर की प्रसन्नता के लिये करनी चाहिये।

[क] जीविका की चिन्ता न हो।

[ख] सत्य कार्य्य में अनुराग।

[ग] पाप के साथ शत्रुता।

[घ] मृत्यु के लिये तैयारी ।

[८८] साधु फकीर की शोभा तीन बातों में है ।

(क) हृदय की विशालता ।

(ख) अन्तः करण की शान्ति ।

(ग) निष्पाप बुद्धि ।

(८९) लक्ष्मी के पात्रों और गर्व वालों को इन तीन बातों से अवश्य सम्बन्ध होता है ।

(क क्लेश ।

(ख) अशुभविचार ।

(ग) पाप का अधिक होना ।

(९०) वैराग्य वान् को क्षण क्षण का कर्म ईश्वरार्पण करना चाहिये । और वाणि का सदुपयोग करना चाहिये

(९१) बुद्धिमान् कौन ? जो संसार से प्रेम न करे ।

(९२) धनवान कौन ? ईश्वर ने जो दिया उसमें सन्तुष्ट रहना ।

(९३) चतुर कौन ? संसार जिसको फंसा न सके ।

(९४) फकीर या त्यागि कौन ? जिसमें संसार की कामना नहीं ।

(९५) कृपण कौन ? जो ईश्वर ने धन दिया है और दान करने से संकोच करता है ।

(९६) चार प्रकार के बुद्धिमान् प्रभु को बहुत प्रिय हैं ।

(क) कामना रहित विद्वान ।

[ख] तत्व जानने वाला ऋषि ।

[ग] नम्रता वाला श्री महन्त ।

[घ] प्रभु की महिमा जानने वाला त्यागी महात्मा ।

[९७] जैसे सिंह से संसारी जीव भय करके भागते हैं इसी प्रकार त्यागी को भी संसार से दूर रहना चाहिये ।

[९८] साधु जनों की सेवा करने वालों को तीन गुण मिलते हैं।

[क] विनय। [ख] शिष्टाचार। [ग] उदारता।

[९९ साधक दो प्रकार के हैं।

[क] एक संसार को देखता है और उस का प्रसन्न करने के लिये कठोर साधनों के पीछे लगा रहता है।

[ख] एक प्रभु को देखता है और उसका प्रसन्न करने की चेष्टा करता है।

[१०० यदि तत्व ज्ञानी साधुओं के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हो तो निष्ठा तथा श्रद्धा पूर्वक रहो। जिस से उन की कृपा तुम्हारे अन्तः करण में उतर कर तुम को शान्ति देगी।

[१०१] वैराग्य के चार लक्षण हैं।

[क] ईश्वर में विश्वास।

[ख] संसार से उपरामता।

[ग] ईश्वर के ऊपर विशुद्ध प्रेम।

[घ] धर्म के लिये कष्ट सहने की शक्ती।

(१०२) सदाचरण दो प्रकार का है।

(क) निति से वर्तना इस का नाम बाह्य समाचार है।

ख) प्रभु प्रति ध्यान. भजन, श्रद्धा, प्रार्थना. संतोष, प्रेम. आज्ञा पालन यह आन्तरिक सदाचार है।

(१०३) प्रभु प्रेमी के यह लक्षण हैं।

(क) साधनों में आडम्बर का अभाव।

(ख) निरन्तर अध्यात्म् चिन्तन्।

(ग एक निष्ट प्रेम।

(घ) मौन रहना।

(१०४) लम्बी आयु चाहते हो तो दुनिया का लालच

[१०५] वैराग्य धारण कर के यदि तुम संसारियों के याचक न बनों तो यह अपने आप ही तुम्हारे पास खिच कर चले आयेंगे ।

[१०६] स्वार्थ त्याग में प्रेमी का जीवन हुवा करता है।

[१०७] अश्रु पान में अनुरागी का जीवन हुवा करता है

[१०८] गुणानुवाद में तत्त्व ज्ञानियों की आयु व्यतीत होती है ।

[१०९] पृथवी पदार्थों में इच्छा और आसक्ति अभिलाषियों का जीवन होता है ।

[११०] स्वर्ग अभिलाषियों का जीवन मरण में होता है

[१११] इस संसार में दो बातें ही ठीक है ।

[क] गरीबों का संग करना ।

[ख] प्रभु परायण साधु संतों का सम्मान करना ।

[११२] तुम बाहर निकलो तो अपने से सब को श्रेष्ठ समझो ।

[११३] कोई किसी प्रकार भी वार्त्तालाप करे उसमें से सत्य और हितकारक का निर्णय कर के ग्रहण करो।

[११४] अत्यंत नीच के साथ भी नम्रता रखनी चाहिये

[११५] पदवी और गौरव में जो श्रेष्ठ हो उस को सम्मान दो ।

[११६] जहां जाओ वहाँ धनवान और से दूर रह प्रभु परायण बने रहो ।

[११७] पाप निवृत्ति के यह लक्षण हैं ।

[क] पाखंडी लोगों से दूर रहना ।

[ख] असत्य का त्याग देना ।

[ग] प्रभु की ओर आगे बढ़ना ।

[घ] अहंकार से दूर रहना।

[ङ] कल्याण के मार्ग पर चलना।

(च) अधर्म, अनीति, पाप कर्म छोड़ने की प्रतिज्ञा।

(छ) जो पाप हो गये उनकी निवृत्ति के लिये प्रयत्न करना।

(ज) नालायक के साथ नालायक न बनना।

(११८) सात्विकता के ये लक्षण हैं।

(क) जो कोई बात गुप्त रखना चाहता है उसके जानने की चेष्टा न करना।

(ख) संदेह वाली वस्तु से दूर रहना और भले बुरे का विचार रखना।

(ग) भावी की चिन्ता न करनी।

(घ) लाभ हानी में एक समान रहना।

(ङ) दूसरी बातें छोड़ कर प्रभु में ध्यान रखना।

(च) राजसी तथा तामसी भोजनों के खान पान से दूर रहना।

[छ] संचित किया हुआ धन सदुपयोग में लगाना।

[ज] अपना गौरव से दूर रखना।

[११६] धैर्य्य के ये लक्षण हैं।

[क] कनिष्ठ प्रवृत्ति पर अंकुश रखना।

[ख] जो ज्ञान प्राप्त किया उसको आचरण में डालना

[ग] प्रभु प्रेम के पीछे लगे रहना।

[घ] घबराहट और जल्दी न करना।

[ङ] सात्विकता के अनुसार अभिलाषा रखना।

[च] साधनों के साधने में दृढ़ता होनी।

[छ] आचार व्यवहार में निष्ठा।

[ज] शुभ प्रयत्न करना ।

(झ) अपवित्रता से दूर रहना ।

(१२०) सत्य-निष्ठा के लक्षण ।

(क, जो अन्दर हो वही बाहर भी बोलना ।

(ख) वाणी और वर्ताव एक रखना ।

(ग) लोक प्रतिष्ठा का लालच छोड़ना ।

(घ) करना घृणा, अहंभाव से दूर रहना ।

(ङ) इस लोक से परलोक को श्रेष्ठ समझना ।

(च) प्रवृत्ति को वश में रखना ।

(१२१) निर्भयता के लक्षण ।

(क) ईश्वर हर एक बात और आवश्यकता में मेरी चिंता रखता है ऐसा विचार करके निश्चिन्त भाव से निष्काम कर्म करना ।

(ख) जिस कालमें जो प्राप्त होजाय उसी पर संतोष रखना ।

(ग) तन मन धन सदा प्रभु सेवा में लगाना ।

(घ) प्रभुता का परित्याग करना ।

(ङ) मैं पद को छोड़ देना ।

(च) संसार में यम बंधन को त्याग कर मगन रहना

(ज) सत्य का अनुसरण करना ।

(झ) तत्व ज्ञान प्राप्त करना ।

(ञ) संसार की ओर आशा छोड़ कर निराशा हो जाना ।

(१२२) ईश्वर प्रेमी के लक्षण ।

(क) एकान्त में निवास ।

(ख) संसार सागर में डूबने का भय ।

(ग) प्रभु-गुणानुवाद का स्वाद और सुख ।

(घ साधन, भजन और सबका मान ।

(ङ) ईश्वर नियमों का परिपालन ।

(१२३) लज्जा के लक्षण ।

क) मान शिक्षण ।

(ख) विचार करके बोलना ।

(ग जिस कार्य्य के करने से माफी मांगनी पड़े उससे दूर रहना ।

(घ) नेत्र, कान और रसना को काबू में रखना ।

(ङ) हर कार्य में सावधानता रखनी ।

(च भुद्रा का बलिदान तथा श्मसान का स्मरण रखना

(१२४) अनुराग के लक्षण ।

(ख) अनाम्य होते हुवे भी जीवन को शत्रु जानना ।

(ग) ईश्वर की कथा कीर्तन और स्मरण में प्रीति रखनी ।

(घ) ईश्वर चिंतन के अतिरिक्त दूसरी ओर समय लग जाय तो उदास हो जाना ।

(ङ) ईश्वर के साथ अंतःकरण को जोड़ देना यह संयोग है और इसके सिवाय दूसरी बातों में चित्त को लगाना यह वियोग है ।

(१२५) सत्य आनन्द तीन बातों में है ।

(क) ईश्वर का भजन और उपासना शुद्ध चित्त से तन्मय होकर करना ।

(ख) प्रभु से सम्बन्ध जोड़ना और लोक से तोड़ना ।

(ग) ईश्वर के स्मरण में और संसार के विस्मरण में ।

(१२६) ईश्वर प्राप्ति के तीन साधन हैं ।

(क) निष्ठा पूर्वक भजन ।

(ख) संसार और संसारियों से दूरता ।

(ग) ईश्वर के अतिरिक्त सब का विस्मरण ।

(१२७) निम्न लिखित वस्तुयें सदा तुम्हारे साथ रहती हैं ।

(क) परमेश्वर ।

(ख) पाप वासना ।

(ग) दुनियावी जीवन ।

(घ) घर बार और संसार ।

(ङ) जन समाज ।

(१२८) जिस साधक को तुम ज़्यादा खाते देखो, समझ लेना कि उसके तीनों काल ख़राब हैं ।

(क) भूत काल में उसने अच्छी तरह जीवन नहीं गुज़ारा ।

[ख] वर्त्तमान काल में ईश्वर प्राप्ति के मार्ग पर नहीं जा सकता ।

[ग] भविष्य काल में प्राप्त की हुई धार्मिक वस्तु का रक्षण नहीं कर सकेगा ।

[१२९] जो किसी प्रभु का दास होता है वह किसी की दासता नहीं करता ।

[१३०] प्रेम तत्व में विघ्न करने वाले निम्न लिखित तत्व हैं ।

[क] किसी भी प्राणी मात्र को हानि पहुंचाना ।

[ख] निन्दा करना ।

[ग] वहम करना ।

[१३१] ईश्वर प्रेम स्वरुप है यदि हम उसके साथ

एक्यता माँगते हैं तो हमें सम्पूर्णतया निःस्वार्थी और प्रेम मय ही होना चाहिये ।

[१३२] सेवा करना परम धर्म है । सेवा और सहायता की तीव्र इच्छा नस २ में होनी चाहिये मनुष्य हो अथवा पन्नो, पशु, ढोर, झाड़ इत्यादि ।

ओ३म् शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

## ॐ परिशिष्ट ॐ

### श्री कृष्णाश्रम ऋषिकुल महाविद्यालय गोपाल मोचन के विषय में विशेष व्याख्यान ।

प्रिय सुहृद् वरो !

जिन महोदयों को श्री १११ श्री स्वामी कृष्णाश्रम जी महाराज के दर्शन तथा सत्संग करने का शुभ अवसर मिला है वे भली भांति जान सकते हैं कि श्रीमान् स्वामी जी कितने तेजस्वी और आत्म ज्ञानी महा व्यक्ति थे मुझ में इतनी शक्ती नहीं कि लेखनी द्वारा उन के उदार चित की विशालता और निःस्वार्थ परता परिपूर्ण परोपकार कार्य्यों का वर्णन कर सकूं आप ने हिन्दू जातिके कल्याण और जागृति करने के लिये जो २ कार्य्य किये हैं वर्णनातीत है । आप का स्वभाव स्वयं ही ऐसा था कि यदि कोई छोटा बालक हिन्दू जाति का उन को मिलता था तो यही उपदेश दिया करते थे कि विद्या पढ़ा करो ।

इसी सिद्धान्त को लेते हुये आप ने कई पाठशालायें और आश्रम हिन्दु जाति के बच्चों के लिये विद्या पढ़ने के अभिप्राय स्थापित किये ऋषिकुल महाविद्यालय तीर्थराज के

गोपाल मोचन ज़िला अम्बाला में स्थापन किया जिस में हिन्दू बच्चों को मुफ्त शिक्षा तथा रोटी कपड़ा देकर ब्रह्मचार्य्य व्रत का पालन कराते हुये उच्च कोटि की धार्मिक कल्याण कारी संस्कृत की शिक्षा दी जाती है याद रखिये देश और जाति के उद्धार का भार हमारे बच्चों पर ही निर्भर है यदि उन को पूर्ण तया शिक्षित तथा ब्रह्मचारी न बनाया जायेगा तो किसी दशा में भी देश और जाति के कल्याण की सम्भावना नहीं की जा सकती।

प्यारे हिन्दू भाईयो! आवो और अपने तथा सम्पूर्ण भारत वर्ष को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने के लिये अपने बच्चों को भीम, अर्जुन के समान आदर्श जीवन बनाने के लिये, पूर्वज ऋषि मुनियों की सन्तान कहलाने का दावा रखते हुये देश के बालकों को ऋषि कुलों में भर्ती कराओ और उनकी सहायता करते हुये अपने विशाल आत्मा और उदार चित्त का प्रमाण देकर जीवन को सफल करो।

इस समय ऋषिकुल महा विद्यालय गोपालमोचन का मासिक खर्च ५००) के लगभग है स्वामी जी तो स्थापना करके स्वर्ग सिधार गये अब इसका बोझभार आप ही लोगों के सिर पर है यह उनका लगाया हुवा विद्या रूपी कल्प वृक्ष है यदि आप सब मिल कर इसे श्रद्धा के जल से सिञ्चन न करेंगे तो यह ही आप को क्या फल दे सकेगा मनुष्य मात्र का जीवन परोपकार के लिये ही है यदि तन है तो परोपकार में लगाईये मन है तो परोपकार के लिये ही है यदि तन है तो परोपकार में लगाईये मन है तो परोपकार में अर्पण कीजिये और यदि ईश्वर ने धन दिया है तो उसे भी परोपकार के लिये बलिदान कर दीजिये मनुष्य देह का सच्चा आभूषण परोपकार ही है।

किसी कवि ने कहा है देखिये एक २ अक्षर स्वर्णाक्षरों में लिखने लायक हैं।

आभरण नर देह का बस एक पर उपकार है।
हार को भूषण कहे उस बुद्धि को धिक्कार है॥
स्वर्ण की ज़ंजीर बांधे श्वान फिर भी श्वान है।
धूरि धूसर भी करी-पाता सदा सम्मान है॥
दिव्यकुल में जन्म ही से लाभ कुछ होना नहीं।
यथा मनोहर फूल में लघु कीट है होना नहीं॥
जिसको न निज ज्ञानी तथा निज देशका कुछ ध्यान है।
वह नर नहीं है नर पशु पृथ्वी में मृत्य समान है॥

इस लिये निवेदन है एक साधु का एक पवित्र. शुद्ध आत्मा का अपने स्वार्थ के लिये नहीं अपने शरीर के लिये नहीं. केवल एक परोपकार और देश उन्नति के लिये हिन्दु जनता के कल्याण के लिये प्यारे भारत के वासी कहाने वालो आओ और अपनी शुभ कमाई में से यथा शक्ति जो हो सके ऋषिकुल के लिये भेजो।

मरूं पर माँगूं नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारणे, मुझे न आवे लाज॥

और निति भी ऐसा कहती है कि:-

तन दे धन को राखिये. धन दे रखिये लाज।
तन दे धन दे लाज दे. एक धर्म के काज॥

इस लिये मेरी प्यारी आत्माओ! ऋषिकुल और ब्रह्मचर्य्याश्रम की रक्षा की यथा शक्ति सहायता कर के इस शुभ कार्य्य में हाथ बढ़ावें जिस से आप का उद्धार होवे देशकी पूर्ण उन्नति हो फिरसे भारत में सतयुग आवे।

कार्तिक की पूर्णमासी को इस स्थान पर एक बड़ा भारी मेला होता है जिस में लाखों की संख्या में हिन्दु

जनता एक त्रित हो कर तीर्थराजमें स्नान और महात्माओं के सत्संग से जीवन सुफल बना कर ब्रह्मचर्य्याश्रम और और ब्रह्मचारियों के दर्शन से सुख शान्ति प्राप्त कर कृतार्थ होते हैं आप भी अपने इष्ट मित्रों सहित पधार कर इस शुभ अवसर पर इस देव भूमि के प्रताप से अंतः करण को शुद्ध बना कर जीवनका पवित्र आदर्श बनाने की चेष्टा कीजिये। और यदि आप को ईश्वर ने धन दिया है तो यथा शक्ति विद्या दान में लगाइये कृत कृत्य हो जाइये। आश्रम के नीचे एक औषधालय भी है जिस में गरीब आदमियों को मुफ्त औषधि दे कर सर्व प्रकार के रोगों का इलाज किया जाता है और धनियों से औषधियों का मूल्य भी लिया जाता है एक और शास्त्र विभाग भी है जो आश्रम के ही आधीन है जिस में सत धर्म और सदाचार के विषय पर पुस्तकें छपा कर प्रकाशित की जाती हैं जो सज्जन अपना धन व्यय कर के कोई पुस्तक छपवाने का भार लेंगे उन का नाम टाइटिल पेज पर सम्मान पूर्वक छपवा दिया जायगा इन पुस्तकों में पक्षपात रहित सनातन धर्म सम्बधी आदर्श महात्माओं के लेख तथा व्याख्यान होंगे।

ब्रह्मचर्य्याश्रम में ब्रह्मचारियों के लिये जो धर्म प्रिये सज्जन कोई मकान बनवायेंगे उन के नाम का एक पत्थर उन की यश और कीर्ति को कायम रखने के लिये मकान में लगा दिया जायेगा।

आश्रम की ओरसे एक साप्ताहिक पत्र शाही जीवन नाम का निकला करेगा जिसमें बड़े २ महात्मा, सन्यासी तथा विद्वानों के व्याख्या नउपदेश और उनकी सुन्दर समधुर आकर्षित करने वाले भाषण प्रकाशित हुवा करेंगे आशा है आप देश सेवाको अपना कल्याणका मार्ग समझते हुये मेरे निवेदनको स्वीकार करनेका यथासम्भव प्रयत्न करेंगे।

अब अंतमें मैं अपने साधू सन्तों तथा बड़े २ मनथीशों को भी चितावनी देता हुवा अपने लेख को समाप्त करना चाहताहूँ और आशा करताहूँ कि मेरे प्यारे साधू संयासी संत महंत इस क्षुद्र कविता के महान् गौरव को समझते हुये देश कल्याण तथा देश सेवा के लिये प्राणपन से चेष्टा करेंगे।

## ॥ कर्त्तव्य–चिन्तन ॥

मातृ भूमि के चरण कमल में, संत महंत और साधु जन।
परोपकार की नौका में चढ़, यदि अर्पण करदें तन मन ॥
सदाचार और सत्य धर्म का, करते रहें सदा पालन।
सदुपदेश दें जनता को, छोड़ व्यर्थ खण्डन मण्डन ॥

शुद्ध प्रेम और एक्य भाव का, घर २ में भर दें भण्डार।
देश के सच्चे वीर उरों में, करें हृदयता का संचार ॥
परमारथ–रत रहें सदा यदि, त्याग स्वार्थ परलोक विचार।
धरा भार की उपमा दे कर, नेतागण क्यों करें पुकार ॥

खा २ माल मस्त हो जाना, करना यों जीवन यापन।
लोभ मोह के उलट फेर में, पड़ तज दिया इष्ट चिन्तन ॥
हीन दशा लखि भारत माता, नित करती करुणा क्रन्दन।
पूर्वज ऋषि मुनि भी करते, स्वर्ग भूमि से अश्रु–पतन ॥

ललित अन्नसे पलित देश हित, यह शरीर करदो बलिदान।
करके दूर दुख माता के, दिखला दो निज शक्ति महान ॥
सुधा–स्नेह–मय प्रणय देव का, घर २ होवे आह्वान।
तुम भी शुद्ध हृदयसे बढ़कर, कहो प्रेम की जय श्रीमान॥

विनीत:—सुधा दास साधु।